NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

MHI - 111

भारत में नगरीकरण–2

(c. 1300-1950)

Urbanisation in India - 2 (c. 1300-1950)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain*

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 350/-

Content

भारत में नगरीकरण-2 (*c.* 1300-1950)

[Urbanisation in India - 2 (*c.* 1300-1950)]

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

Sample Question Paper–2 (Solved) 1

Sample Question Paper–3 (Solved) 1

Sample Question Paper–4 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

नगरीय इतिहास एक परिचय (Introduction to Urban History)

1. मध्यकालीन नगरीकरण के अध्ययन संबंधी विचारधाराएँ 1
   (Approaches to the Study of Medieval Urbanisation)
2. आधुनिक नगरों के अध्ययन संबंधी विभिन्न दृष्टिकोण 9
   (Themes on Modern Cities)

नगरीकरण के पैटर्न : *c.* 1300-1600 (Patterns of Urbanisation *c.* 1300-1600)

3. सल्तनत और इसके नगर 16
   (Sultanate and Its Cities)
4. क्षेत्रीय नगर 24
   (Regional Cities)
5. प्रायद्वीपीय भारत में मंदिर नगर 29
   (Temple Towns in Peninsular India)
6. दक्षिण भारतीय आयाम : गौरवशाली विजयनगर 37
   (Southern Dimension: The Glory of Vijayanagara)
7. दिल्ली के नदी तटीय मैदान में स्थित सल्तनत के राजधानी नगर 44
   (Sultanate Capital Cities in the Delhi Riverine Plain)
8. बंदरगाह नगर : कैम्बे 49
   (Port Town: Cambay)

मुगलकालीन भारत में नगरीकरण के पैटर्न (Patterns of Urbanisation in Mughal India)

9. मुगलकालीन नगरों की स्थानिक विशेषताएँ 54
   (Spatial Characteristics of Mughal Cities)
10. मध्यकालीन दक्खन में नगरों का स्वरूप 61
    (Urban Patterns in Medieval Deccan)
11. नगरीय संस्कृति और समाज 68
    (Urban Culture and Society)
12. राजधानी नगर : आगरा-फतेहपुरी सीकरी-शाहजहाँनाबाद 75
    (Primate Cities: Agra-Fatehpur Sikri-Shahjahanabad)

13. धार्मिक नगरीय स्थल : अजमेर-बनारस-पंढरपुर 83
(Sacred City Spaces: Ajmer-Banaras-Pandharpur)

14. मसूलीपट्टनम : एक अध्ययन 89
(Case Study: Masulipatnam)

प्रारम्भिक आधुनिक नगर (Early Modern Cities)

15. पूँजीवाद, उपनिवेशवाद और प्रारम्भिक आधुनिक भारत में नगर 94
(Capitalism, Colonialism and Cities in Early Modern India)

16. पत्तन नगर : सोलहवीं से अठारहवीं शताब्दी 99
(Port Cities: 16th to 18th Centuries)

17. अठारहवीं शताब्दी में नगर-1 109
(Cities in the 18th Century-1)

18. अठारहवीं शताब्दी में नगर-2 117
(Cities in the 18th Century-2)

19. लखनऊ : एक अध्ययन 123
(Case Study: Lucknow)

20. पांडिचेरी : एक अध्ययन 130
(Case Study: Pondicherry)

औपनिवेशिक नगर-1 (Colonial Cities-1)

21. औपनिवेशिक भारत में आश्रित नगरीकरण तथा नगरीकरण के नवीन शहरी रूप 139
(Dependent Urbanisation and New Urban Forms in Colonial India)

22. औपनिवेशिक नगरों में नस्ल, वर्ग और जातीयता 146
(Race, Class and Ethnicity in the Colonial City)

23. नगर एक भव्य प्रदर्शन स्थल के रूप में 152
(The City as the Site of Spectacle)

24. नगर एक आंदोलन स्थल के रूप में 157
(The City as the Site of Movements)

औपनिवेशिक नगर-2 (Colonial Cities-2)

25. औपनिवेशिक भारत में आधुनिकता एवं नगर 161
(Modernity and the City in Colonial India)

26. ब्रिटिश शासन के अधीन भारत में नगर नियोजन 166
(City Planning in India Under British Rule)

27. बम्बई : एक अध्ययन 172
(Case Study: Bombay)

उत्तर औपनिवेशिक नगर (Post-Colonial Cities)

28. उत्तर-औपनिवेशिक नगर : दुविधाएँ एवं चुनौतियाँ 179
(Predicaments of Post-Colonial Cities)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 1

(Solved)

भारत में नगरीकरण–2 (*c.* 1300-1950)
(Urbanisation in India - 2)

MHI-111

समय : 3 घण्टे] *[कुल अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से कोई पाँच प्रश्न करें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. यूरोपियनों ने 18वीं सदी में किस प्रकार से ढाका के आर्थिक पुनरुद्धार को सुगम बनाया?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-17, पृष्ठ-111, प्रश्न 2

प्रश्न 2. कैम्बे शहर के पतन के कारणों पर चर्चा करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-52, प्रश्न 6

प्रश्न 3. नगरीय केंद्रों की संरचना में संपर्कों और प्रवाहों की क्या भूमिका है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-13, प्रश्न 5

प्रश्न 4. मसूलीपट्टनम बंदरगाह की स्थानिक विशेषताएँ क्या थीं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-90, प्रश्न 1

प्रश्न 5. मध्ययुगीन शहरी सामाजिक संरचना संभ्रान्त और आम लोगों के सह-अस्तित्व को प्रस्तुत करती है। टिप्पणी कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-70, प्रश्न 2

प्रश्न 6. "तंजावुर चोलों की राजनीतिक इच्छा द्वारा मुख्य 'समारोह' केन्द्र के रूप में उभरा" टिप्पणी कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-33, प्रश्न 6

प्रश्न 7. मुगल नगरीय परिदृश्य की विशेषताओं की संक्षेप में चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-58, प्रश्न 6

प्रश्न 8. अंग्रेजों द्वारा अपनी वास्तुकला शैली में विकसित इंडो-सासैनिक स्थापत्य शैली को भारतीयों ने किस प्रकार अपनाया या परिवर्तित किया? इसकी चर्चा कम से कम दो उदाहरणों द्वारा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-23, पृष्ठ-155, प्रश्न 5

प्रश्न 9. औपनिवेशिक शासन के दौरान शहरी आधुनिकता से जुड़े भारतीय अनुभव में क्या विशिष्ट था? भारतीयों ने किस सीमा तक इस प्रक्षेप पथ को आकार प्रदान करने का कार्य किया?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-25, पृष्ठ-164, प्रश्न 4

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए–

(क) पुर्तगाली नगर : पोलिसगार्किक

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'पुर्तगाली नगर : पोलिसगार्किक'

(ख) मुगल राजधानी नगरों में प्रतीकात्मकता

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-77, 'मुगल राजधानी नगरों में प्रतीकात्मकता'

(ग) पांडिचेरी की सामाजिक संरचना

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-20, पृष्ठ-131, 'सामाजिक संरचना'

(घ) सामाजिक आंदोलन और नगर

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-28, पृष्ठ-180, 'सामाजिक आंदोलन तथा शहर'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 2

(Solved)

भारत में नगरीकरण-2 (*c.* 1300-1950)
(Urbanisation in India - 2)

MHI-111

समय : 3 घण्टे] *[कुल अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से कोई पाँच प्रश्न करें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. 15वीं शताब्दी के आरंभिक चरण में विजयनगर शहर के उद्भव की गाथा का विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-39, प्रश्न 2

प्रश्न 2. मुगल राजधानियाँ पत्थरों से बने शिविर थे। टिप्पणी कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-80, प्रश्न 5

प्रश्न 3. पश्चिमी भारत में 18वीं सदी के पूर्वार्द्ध में पूंजीवाद तथा उपनिवेशवाद के प्रभावों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-95, प्रश्न 1

प्रश्न 4. नदी तटीय क्षेत्रों के लिए सुल्तानों की वरीयता क्या थी? बताइए कौन-से राजधानी नगर नदी तटीय पट्टी से बाहर थे और क्यों?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-47, प्रश्न 4

प्रश्न 5. क्या आप ऐसा सोचते है कि स्वतंत्रता के बाद भारत में उभरे सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलन खराब नगरीय नियोजन से जुड़े हुए थे?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-28, पृष्ठ-183, प्रश्न 6

प्रश्न 6. बीदर शहर की संवृद्धि और विकास में बीदरीवेयर के महत्त्व पर प्रकाश डालें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-65, प्रश्न 5

प्रश्न 7. 'नगरीय और आधुनिक में निकट संपर्क है।' इस वक्तव्य पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-11, प्रश्न 2

प्रश्न 8. स्मारकीय भवन क्या दर्शाते हैं? क्या इनसे सत्ता का कोई आयाम जुड़ा है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-127, प्रश्न 4

प्रश्न 9. पूर्व-औपनिवेशिक नगरों के नियोजन पर 1857 के विद्रोह का क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-23, पृष्ठ-154, प्रश्न 3

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए–

(क) कालपी

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-24, 'कालपी'

(ख) पंढरपुर

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-84, 'पंढरपुर'

(ग) सिंचाई और नहर कॉलोनियां

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-21, पृष्ठ-140, 'सिंचाई और नहर कॉलोनियां'

(घ) इम्प्रूवमेंट ट्रस्टों के मिश्रित परिणाम

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-26, पृष्ठ-167, 'इम्प्रूवमेंट ट्रस्टों के मिश्रित परिणाम'

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

भारत में नगरीकरण–2 (*c.* 1300-1950)
[Urbanisation in India - 2 (*c.* 1300-1950)]

मध्यकालीन नगरीकरण के अध्ययन संबंधी विचारधाराएँ
(Approaches to the Study of Medieval Urbanisation)

1

परिचय

सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन से नगरों के स्वरूप और नाम में परिवर्तन आ जाता है, इसलिए मध्यकालीन नगरों का स्वरूप प्राचीनतम और आधुनिक काल के नगरों से भिन्न है, परंतु यह स्वरूप प्राचीन काल और आधुनिक काल के स्वरूप से जुड़ा हुआ है। नगरों का अर्थ ऐतिहासिक अवधियों और क्षेत्रीय संदर्भों में भी बदल जाता है। वस्तुत: नगर की प्रवृत्ति है कि उसका सारतत्त्व समय के साथ बदलता रहता है। नगर गतिशील होते हैं और सामाजिक तथा धार्मिक प्रक्रियाओं के साथ परिवर्तित होते हैं। वे अपने सूक्ष्म रूप में व्यापक जगत का नेतृत्व करते हैं। मध्यकालीन भारत के नगरों को समझने की अनेक संभावनाएं और तरीके हैं। यह स्पष्ट है कि ऐतिहासिक रूप से इन नगरों ने सामाजिक-आर्थिक प्रक्रियाओं के दो भिन्न समूहों–प्राचीन काल और दूसरा आधुनिक काल के बीच के बड़े समयान्तर को पाटने की भूमिका निभायी है। दो कालों के बीच योजक होने के अतिरिक्त मध्यकालीन नगरों की कतिपय अपनी विशिष्ट विशेषताएं थीं, यह उन व्यापक सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं, जिनके अंदर उनका विकास हुआ, केन्द्रीकृत तथा गहन रूप का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अध्याय का विहंगावलोकन

यूरोप में मध्यकालीन नगरों की धारणा

अधिक विकास से नगरों का स्वरूप बदलता है। इसी आधार पर इतिहासकारों और समाजशास्त्रियों ने नगरीय प्रक्रिया की सूक्ष्म प्रवृत्ति का अध्ययन करने का प्रयास किया है। मैक्स वेबर ने उत्पादकों और व्यापारियों की गतिविधियों के आधार पर मध्यकालीन नगरों में घटित सत्ता के स्वरूपों और रूपान्तरण को सामाजिक कार्यकलापों के प्रकारों के रूप में देखा है। उसके अनुसार अर्थव्यवस्था और सत्ता का प्रयोग मध्यकालीन पश्चिमी नगरों में कार्य आचार के विकास का साधक था। हेनरी पिरेन मध्यकालीन नगरों की प्रधानता और लम्बी दूरी के व्यापार को सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में देखते हैं। उनके अनुसार 11वीं सदी के बाद से पश्चिमी यूरोप में वाणिज्यिक पुनरुद्धार के साथ यूरोप में नगरीकरण आगे बढ़ने लगा। मॉरिस डॉब ने बताया कि मध्यकालीन नगरों के उत्थान और बाजारों के विकास ने सामंतवाद की रचना पर बुरा प्रभाव डाला। उसने मध्यकाल नगरों को परतंत्र समाज के बीच एक नखलिस्तान के रूप में देखा, जहाँ दमित ग्रामीणों को नगरों की ओर कूच करने का अवसर मिला।

इतिहासकारों ने पश्चिम में विभिन्न प्रकार के मध्यकालीन नगरों का उल्लेख किया है। हेनरी पिरेन ने मध्यकालीन नगरों को श्रेणियों बांटा है–सामंत के अधीन नगर और फ्लेमिश नगर। सामंत के अधीन नगर मुख्यत: राजनीतिक केन्द्र या बिशप का आवास या उसकी अदालत की गतिविधियों का केन्द्र थे। फ्लेमिश प्रकार का नगर मुख्यत: आर्थिक इकाई थी, जिस पर कुलीन तंत्र की सत्ता होती थी, जिसमें मुख्य रूप से व्यापारी थे। इन नगरों के निवासियों के जीवनयापन की मुख्यधारा व्यापार था। फर्नाल्ड ब्रॉडल के अनुसार नगरों के विकास क्रम के तीन बुनियादी प्रकार के नगर थे; जैसे–ग्रीस और रोम। द्वितीय प्रकार में आरक्षित नगर थे, आत्मनिर्भर इकाइयां थीं और प्रत्येक दृष्टि में अपने आप में रक्षित थीं। तृतीय प्रकार में अधीनस्थ नगर शामिल थे, जो राज्यों और राजाओं के अधीन होते थे; जैसे–फ्लोरेंस।

श्रम विभाजन के आधार पर नगर को गांव से अलग किया जा सकता है। इतिहासकारों ने नगरों में श्रम प्रक्रियाओं का भी अध्ययन किया है। फर्नान्ड ब्रॉडल का मानना है कि व्यापारी, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक नियंत्रण संबंधी प्रकार्य और शिल्प क्रियाकलाप नगरों के प्रमुख लक्षण हैं, परंतु वे यह भी कहते हैं कि सभी लक्षण बड़े नगरों में दिखाई देते हैं। आधुनिक नगरों की अपेक्षा मध्यकालीन नगरों में कम सघन श्रम प्रक्रिया थी। हाल ही में मध्यकालीन नगरों को सांस्कृतिक रचना के रूप में देखने का प्रयास किया गया है। नगरीय समुदायिक भागीदारी, बहुनिष्ठा तथा बहुसंबद्धता के कारण उनका सांस्कृतिक निर्माण के संदर्भ में अध्ययन किया जाता है। हार्वी के अनुसार इतिहास से संबंध भूगोलविद् तर्क देते है कि स्थानिक प्रक्रिया कुछ ऐसी है, जो अचानक नहीं होती है, अपितु निश्चित

www.neerajbooks.com

प्रयोजन से और तर्क के साथ होती है। उनका विचार है कि नगरीय स्थल अभिप्रायपूर्ण अर्थ से संयुक्त होता है और बताता है कि किस प्रकार सत्ता और प्रभुत्व नगरीय स्थल में चिह्नित हैं। फूको का दृढ़ विश्वास था कि समाज में सत्ता का विश्लेषण स्थल के ऊपर नियंत्रण के विश्लेषण के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

नगरीय इतिहासकारों और समाजशास्त्रियों के अनुसार नगरीकरण की प्रक्रिया के अध्ययन को जनसंख्या, सामाजिक संगठन, भौतिक परिवेश और प्रौद्योगिकी पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। नगरीय परिवर्तन की प्रक्रिया तब आरंभ होती है, जब बदलते हुए सामाजिक संगठन की प्रौद्योगिकी नवोन्मेष नगरी स्थल में इस प्रकार की घटना होती हैं, जिसमें जनसंख्या और पर्यावरण के बीच संतुलन बदल जाता है। नगरीय स्थलों में प्रौद्योगिकी की मध्यस्थता की प्रकृति को समझने के क्रम में संचार माध्यमों, परिवहन के साधनों तथा सूचनात्मक नेटवर्क का विश्लेषण करना चाहिए।

मध्यकालीन भारतीय नगरों संबंधी दृष्टिकोण

मोहम्मद हबीब का कहना है कि मोहम्मद गोरी की विजय के पश्चात उत्तर भारत में श्रम प्रक्रिया में तेजी आई और इसी के साथ 'नगरीय क्रांति का जन्म हुआ। मोहम्मद गौरी के सैनिकों ने नगरों में प्रवेश कर औद्योगिक क्षेत्र में निर्मित पदार्थों के उत्पादन का कार्य किया। इनमें आपस में कोई भेदभाव नहीं था। महावत, कसाई और बुनकरों आदि ने श्रम में योगदान दिया। इस्लाम के प्रभाव से इन कार्यों में तुर्की हिस्सेदारी बढ़ गई और इससे सामाजिक गतिशीलता बढ़ी। सेना के लिए सैनिक, कारखानों के लिए कर्मकार, शिल्पकार, निजी सेवक, संगीतकार, नर्तकियां आदि नगरों में बड़ी संख्या में उपलब्ध हो गए। इस प्रकार गौरी तुर्कों के नेतृत्व में भारतीय नगरीय श्रम क्रांति आई। मध्यकालीन नगरों के श्रम प्रक्रिया की, जो मोहम्मद हबीब द्वारा व्यक्त की गई है, उसकी इरफान हबीब ने आलोचना की है। उनके अनुसार आर्थिक विस्तार का कारण मुख्यत: कागज, वस्त्र और भवन प्रौद्योगिकी के परिवर्तन और व्यापार को बढ़ावा देना है। इसके साथ नई भू-राजस्व प्रणाली के माध्यम से ग्रामीण अधिशेष के बड़े भाग को हस्तगत करना भी है। उनके अनुसार मध्यकालीन भारतीय नगरों में दास श्रमिक या परतंत्र श्रमिक उत्पादन के सभी क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण थे।

मध्यकालीन भारतीय नगरों के उद्‌भव को बी.डी. चट्टोपाध्याय और आर. चम्पक लक्ष्मी नौवीं शताब्दी के बाद मानते हैं। चट्टोपाध्याय के अनुसार उत्तर-पश्चिम भारत के नगरों के उद्‌भव का कारण व्यापार से उत्सर्जित शक्तियां थीं। इसके बारे में आर. चम्पकलक्ष्मी का कहना है कि दक्षिण भारत में नौवीं तथा तेरहवीं सदियों के बीच की अवधि विदेशी व्यापार से प्रेरित होकर चोल राज्य में अनेक नगरों का विकास हुआ। तंजौर यहाँ का एक मुख्य राज्य था।

अनेक इतिहासकारों ने सामाजिक-आर्थिक प्रक्रियाओं के विश्लेषण का अध्ययन किया है। इसमें नकवी और ओरलैंड प्रमुख हैं। उनका अध्ययन उत्तर भारत के प्रमुख नगरों की विशेषताओं और उनकी आर्थिक प्रगति के बारे में है। शारीन मूसबी ने उत्तर भारत के शिल्प उत्पादक नगरों की श्रम प्रक्रियाओं का अध्ययन किया है। इसके लिए उन्होंने मुगलकालीन नगरीकरण का विस्तार जानने हेतु सूबों और नगरों से नगरीय कर से प्राप्त आय से संबंधित आंकड़ों का प्रयोग किया है। उन्होंने संप्रभुनगर शाहजहनाबाद का भी अध्ययन किया है। संप्रभुनगर राजनीतिक केन्द्र होता था और वहां शासक रहता था। सतीचन्द्र अठारहवीं सदी के अशांत नगरों की संघर्षपूर्ण दशाओं का वर्णन करते हैं। इंदु बंगा ने भारत में नगरवाद के सूक्ष्म अर्थों की जाँच के लिए नगरीय इतिहासकारों को एक जगह एकत्र किया।

मध्यकालीन नगरीय इतिहास लेखन में नगरों से सम्बद्ध जाँच करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वस्तुत: मध्यकालीन नगरों के उदय तथा संपोषण के लिए कारणात्मक तत्त्व समय समय पर बदलते रहे हैं। अधिकांश नगरों का उदय राजनीतिक कारणों से हुआ और समय व्यतीत होने के साथ वहां आर्थिक गतिविधियां भी तेज हो गईं। उदय के बाद कई नगरों के कार्य एवं भूमिका बदल गई।

मध्यकालीन नगरवाद की धारणा

वाणिज्यिक और राजनीतिक रूप से अभिप्रेरित नगरवाद

मध्यकाल एवं पूर्व आधुनिक काल में दो प्रकार के नगरवाद थे–वाणिज्यिक नगरवाद और राजनीति से अभिप्रेरित नगरवाद। वाणिज्यिक नगरवाद शिल्पकारों द्वारा निर्मित वस्तुओं और व्यापारिक उत्पादक-सह-विनिमय केन्द्रों द्वारा उत्सर्जित आर्थिक शक्तियों के कारण आया; जैसे–दिल्ली, आगरा, लाहौर आदि राज्य की राजधानी बने नगरों में ये दोनों विशेषताएं थीं। धार्मिक आवश्यकताओं के कारण उत्पादन में अंतर आया। उदाहरण के लिए, इस्लामिक नगरों में वस्त्रों का उत्पादन बड़े पैमाने पर होता था, क्योंकि यहां स्त्री और पुरुषों को पूर्ण वस्त्र धारण करने पड़ते थे।

नगरवाद और सूफी तथा भक्ति का प्रसार

बुनकरों तथा शिल्पकारों से अपने को अलग करने के लिए एवं स्वयं को सामाजिक रूप से स्वीकार्य तथा ग्राह्य बनाने के मध्य वर्ग स्वयं को सूफी तथा भक्ति परंपरा से जोड़ता गया। सूफी और भक्ति आंदोलन दोनों ने सांस्कृतिक शक्ति के रूप में नगरवाद के विकास में योगदान दिया। इन आंदोलन में संतों ने शिल्पकारों और बुनकरों को महत्त्वपूर्ण बनाने के लिए श्रम की संस्कृति को वैध बताया। फलस्वरूप ग्रामीण कुलीनों और अभिजात की अपेक्षा श्रमबल अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया। तीर्थयात्री और संतों के आवागमन से कई नगर प्रसिद्ध हो गए। आगे चलकर भक्ति तथा सूफी आंदोलनों ने उत्तर भारत के शिल्पकार समूहों को लामबंद किया, जिसने नगरवाद को विकसित करने में सहयोग दिया। कबीर के कारण बनारस और दादू के कारण कल्याणपुर आदि अधिक प्रसिद्ध हुए।

पोलिसक्रेसी

मुगलों तथा पुर्तगालियों ने 16वीं शताब्दी में राजनीतिक प्रक्रियाओं के मूल अवयव के नगरों को विभिन्न मुख्य केन्द्रों से जोड़ने का प्रयास किया। इनका संपर्क गांवों से था। इसके माध्यम से अधिशेष के दोहन की प्रक्रिया को साम्राज्य के चारों ओर फैलाया गया। मुगलों के इस प्रकार के शासन को 'पोलिसक्रेसी' कहा जा सकता है। इसकी उत्पत्ति ग्रीक भाषा के शब्द पोलिस (नगर) से हुई है, जो नगरों और नगर निवासियों के माध्यम से श्रेष्ठ प्राधिकार के शासन

www.neerajbooks.com

का सूचक है। उसने गांव की आर्थिक तथा राजनीतिक सत्ता को अपने अधीन बनाए रखा। सर्वप्रथम मुगल बादशाह अकबर ने अपने उभरते हुए साम्राज्य में प्रमुख संसाधन उत्पन्न करने वाले स्थानों में नगरों की श्रृंखला के निर्माण के साथ शासन का 'पोलिसक्रैटिक' स्वरूप आरंभ किया। मुजफ्फरशाह को पराजित कर गुजरात की विजय (1572-73) ने अकबर को सूरत, भड़ौच तथा कैम्बे के व्यावसायिक बन्दरगाह का स्वामी बना दिया। इसी प्रकार बंगाल विजय से भी कई लाभ हुए। सत्ता को सुदृढ़ बनाने के लिए इलाहाबाद में संगम पर किला बनवाया। जहांगीर, शाहजहां और औरंगजेब ने भी कुछ इसी प्रकार के प्रयास किए।

विद्यमान नगरों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शासकों ने समय-समय पर अपनी राजधानियां बदलीं तथा स्थापित भी की। नगरों के निर्माण और उसकी देखरेख के लिए मनसबदारी प्रणाली शुरू की गई। नगर उन्मुखी कार्यकलापों में प्रौद्योगिकी खोजों को विशेष महत्त्व दिया गया, ताकि पोलिसक्रैटिक शासन सफल हो सके। भारतीय नगरों से तैयार उत्पाद नदी मार्ग या जी.टी. रोड आदि महामार्गों द्वारा दूर-दूर पहुँचाया जाता था।

पुर्तगाली नगर : पोलिसगार्किक

गोवा आदि में पुर्तगालियों का सुदृढ़ शासन स्थापित था। उन्होंने नगरों का प्रयोग गांवों के अधिशेष को प्राप्त करने तथा लाभ कमाने के लिए किया। इस धन को वे यूरोप लेकर गए। इसके विपरीत मुगलों ने भारत का धन भारत में ही निवेशित किया। पुर्तगालियों ने भारत के पश्चिमी तट पर अनेक नगरों–कोचीन, मैंगलोर, दमन और दीव आदि की स्थापना की। उन्होंने नगर-एन्क्लेवों का ऐसा स्वरूप बनाया, जिससे आंतरिक भागों से राजस्व की निकासी अधिकतम हो सके। पुर्तगालियों के इस प्रशासन को 'पोलिसगार्किक' कहा। उन्होंने पश्चिमी तट पर स्थित विभिन्न नगर केन्द्रों से व्यापारिक कार्यकलापों द्वारा अगाध सम्पत्ति एकत्र की और उसे यूरोप में हस्तान्तरित किया। गोवा नगर में प्रत्येक निवासी को पुर्तगाली धर्म का पालन करना पड़ता था तथा लूसिटेनियन सांस्कृतिक प्रथाओं का पालन करना पड़ता था। पुर्तगाली निजी व्यापारी स्वयं को नगर पुर्तगाली शासन से स्वतंत्र रखना चाहते थे।

नगर राज्य

मध्यकाल में नगर राज्य लघु राज्य या अर्ध राज्य थे, जो क्रमशः सुदूर दक्षिण में क्रमशः कालीकट और कोचीन के पत्तन नगरों के समीप समुद्री व्यापार में राजनीतिक शक्ति प्राप्त कर प्रकट हुए। इसी से इटली में वेनिस और फ्लोरेन्स, जर्मनी में ब्रेमन आदि निर्मित हुए। अपने पत्तन नगरों के समुद्री व्यापार के प्रतिलाभों के साथ कालीकट और कोचीन के नगरीय केन्द्र के शासकों ने राज्य निर्माण की प्रक्रिया में एक आंतरिक भू-भाग का सृजन किया। आंतरिक भाग में बिखरे हुए उत्पादन केन्द्र राजनीतिक विजयों द्वारा सत्ता के केन्द्र तथा पत्तनों की व्यापारिक गतिविधियों से जोड़ दिए गए। कोचीन में घरेलू व्यापार की जिम्मेदारी मापिल्ला मुस्लिम व्यापारी को सौंपी गई थी। यह मापिल्ला मुस्लिम कालीकट के कोया के रूप में प्रसिद्ध हुआ, जो कालीकट में प्रशासनिक दृष्टि से शक्तिशाली बन गया।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. मध्यकालीन नगरों के अध्ययन के विभिन्न दृष्टिकोण कौन-से हैं?

उत्तर–मध्यकालीन नगरों के अध्ययन के दृष्टिकोणों को दो भागों–यूरोपीय मध्यकालीन नगरों संबंधी दृष्टिकोण तथा मध्यकालीन भारतीय नगरों संबंधी दृष्टिकोण में विभाजित किया जा सकता है।

यूरोपीय दृष्टिकोण में मैक्स वेबर ने मध्यकालीन नगरों को उत्पादन केन्द्र के रूप में देखा। ये मध्यकालीन नगर पश्चिम में पूंजीवाद के विकास के लिए प्रक्षेप स्थल बन गए। हेनरी पिरेन मध्यकालीन नगरों की प्रधानता और लम्बी दूरी के व्यापार को सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में देखते हैं। उनके अनुसार ग्यारहवीं सदी के बाद से पश्चिमी यूरोप में व्यापारिक उन्नति के साथ यूरोपीय नगरों का उद्भव हुआ। फर्नान्ड ब्रॉडल के अनुसार नगरों के विकास के क्रम तीन बुनियादी प्रकार के नगर थे–

(i) मुक्तनगर,
(ii) आरक्षित नगर,
(iii) अधीनस्थ नगर।

मिशेल, फूको, हेनरी लेफेब्र और एडवर्ड सोजा का कहना है कि नगरीय इकाइयों के निर्माण में सम्मिलित स्थानिक प्रक्रियाओं का विश्लेषण और अध्ययन उनसे मानवीय निर्माताओं के उद्देश्य तथा उनकी पूर्ति की सीमा का पता लगाने के लिए किया जा सकता है।

मध्यकालीन भारतीय नगरों संबंधी दृष्टिकोण में मोहम्मद हबीब के अनुसार मोहम्मद गौरी की विजय के पश्चात उत्तर भारत में श्रम प्रक्रिया में अचानक वृद्धि के फलस्वरूप नगरीय क्रांति का प्रादुर्भाव हुआ।

बी.डी. चट्टोपाध्याय और आर. चम्पकलक्ष्मी ने मध्यकालीन भारतीय नगरों का उद्भव नौवीं सदी के बाद के काल को माना है। मोरलैंड और नकवी का अध्ययन मुख्य रूप से उत्तर भारत के प्रमुख नगरों की मुख्य विशेषताओं तथा आर्थिक प्रगति के साथ उनके संबंधों की जाँच के इर्द-गिर्द घूमता है। शीरीन मूसवी ने उत्तर भारत के प्रमुख शिल्प उत्पादक नगरों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। इंदु बंगा का अध्ययन पत्तन के नगरीकरण की प्रक्रिया से संबंधित है।

मध्यकालीन शहरों के अध्ययन के लिए उनके ऐतिहासिक, सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भों की सूक्ष्म समझ की आवश्यकता होती है। विभिन्न विद्वानों के दृष्टिकोण शहरीकरण की गतिशीलता और समाजों पर इसके परिवर्तनकारी प्रभाव को उजागर करते हैं। मध्यकालीन शहरों का विश्लेषण निम्नलिखित दृष्टिकोणों से किया जा सकता है–

(क) सामाजिक-आर्थिक प्रक्रियाओं के दर्पण के रूप में शहर–शहर व्यापक सामाजिक परिवर्तनों के प्रतिबिंब हैं, जो आर्थिक प्रणालियों के साथ विकसित होते हैं। मध्यकालीन शहर प्राचीन या आधुनिक शहरों से काफी भिन्न थे, जो सामंती और उभरती पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं द्वारा आकार लेते थे। यह दृष्टिकोण शहरों को सामाजिक

www.neerajbooks.com

संबंधों के केंद्रित रूपों के रूप में दर्शाता है, जो सामाजिक गुणों को तीव्र करते हैं और व्यापक प्रणालियों के लिए सूक्ष्म जगत के रूप में कार्य करते हैं।

(ख) मध्यकालीन शहरों पर यूरोपीय दृष्टिकोण–मैक्स वेबर ने मध्यकालीन पश्चिमी शहरों को उत्पादन के केंद्रों के रूप में देखा, जो सामंती सत्ता को चुनौती देते थे, पूंजीवाद और एक तर्कसंगत आर्थिक लोकाचार को बढ़ावा देते थे। हेनरी पिरेन ने शहरीकरण को लंबी दूरी के व्यापार से जोड़ा, जो मौरिस डॉब के आंतरिक सामंती गतिशीलता पर ध्यान केंद्रित करने के विपरीत था। ब्राउडल जैसे विद्वानों ने शहरों को खुले, बंद और विषय प्रकारों में वर्गीकृत किया, जो विविध शक्ति गतिशीलता को दर्शाता है। ये रूपरेखाएँ स्वायत्तता, व्यापार और सामाजिक परिवर्तन के परस्पर क्रिया पर जोर देती हैं।

(ग) मध्यकालीन भारतीय शहरीकरण–मोहम्मद हबीब ने राजनीतिक विजय द्वारा शुरू की गई ष्शहरी क्रांतिष् का वर्णन किया, जिसने हाशिए पर पड़े समुदायों को शहरों में एकीकृत किया। इरफान हबीब ने शहरी विकास के उत्प्रेरक के रूप में तकनीकी नवाचारों और कृषि अधिशेष के लिए तर्क दिया, जिसमें अप्रतिबंधित श्रम पर जोर दिया गया। बी.डी. चट्टोपाध्याय ने गुजरात जैसे क्षेत्रों में व्यापार-संचालित शहरीकरण पर प्रकाश डाला, जबकि चंपाकलक्ष्मी ने दक्षिण भारत में विविध शहरी रूपों पर जोर दिया, जो व्यापार और मंदिर अर्थव्यवस्थाओं द्वारा आकार लेते हैं।

प्रश्न 2. विद्वान मध्यकालीन यूरोपीय नगरों को किस तरह देखते हैं?

उत्तर–मध्यकालीन यूरोपीय नगर-मैक्स वेबर ने प्राचीन ग्रीक तथा रोमन नगरों, जो मुख्यत: उपभोग के केन्द्र थे, के विपरीत यूरोपीय मध्यकालीन नगरों को उत्पादन केन्द्र के रूप में देखा। पूँजीवादी विकास की प्रक्रियाओं को विनिमय की प्रक्रियाओं से जोड़ दिया गया। यहां उत्पादकों एवं व्यापारियों के हितों को राजनीतिक तथा सांस्कृतिक प्राथमिकता भी प्रदान की। मध्यकालीन पश्चिम के निवासियों की रचना उत्पादकों तथा व्यापारियों से मिलकर हुई थी। उन्होंने अपने चारों ओर फैले वैध सामंती प्राधिकारियों पर अपनी निर्भरता को समाप्त कर दिया और अपना अवैध प्रभुत्व जमाने के लिए सत्ता हड़प ली। उसके अनुसार, जिसे एक आदर्श पूर्व नगरीय समुदाय समझा जाता था, वह एक ऐसी बसावट थी, जिसमें व्यापार वाणिज्यिक संबंधों के सापेक्षिक पूर्व प्रभुत्व तथा इसकी किलेबंदी, बाजार इसके अपने न्यायालय तथा स्वायत्त कानून थे।

हेनरी पिरेन मध्यकालीन नगरों की स्थापना का श्रेय सामाजिक परिवर्तन को देते हैं, जो व्यापार बढ़ने के कारण हुई। मॉरिस डॉब ने बताया कि मध्यकालीन नगरों के उत्थान और बाजारों के विराम ने सामंतवाद की संरचना पर विघटनकारी प्रभाव डाला था और उन शक्तियों को मजबूत किया, जिसने इसे निर्बल किया और समाप्त किया। उन्होंने आगे तर्क दिया कि मध्यकालीन नगरों का उत्थान सामंती व्यवस्था की आंतरिक प्रक्रिया थी। उसने मध्यकालीन नगरों को परतंत्र समाज के मध्य एक नखलिस्तान के रूप में देखा, जिसने दमित तथा शोषित ग्रामीण जनसंख्या को अपनी ओर आकर्षित किया और उन्हें नगरों में बसने के लिए प्रेरित किया।

फर्नान्ड ब्रॉडलर का विचार है कि नगरों के विकास के क्रम मे तीन मौलिक प्रकार के नगर थे–

(i) मुक्तनगर अपने आंतरिक भूभाग के समान थे और कभी-कभी इसमें मिश्रित भी होते थे। इसके उदाहरण ग्रीस और रोम हैं। इस प्रकार के नगरों के अधिकांश भाग पर किसानों का कब्जा था।

(ii) आरक्षित नगर आत्मनिर्भर इकाइयों में थे और स्वयं में अधिक सुरक्षित थे। यहां की जीवन-शैली व्यक्तिगत थी। ये नगर सामन्तों से मुक्त थे। इन नगरों में रहने वाले लोगों द्वारा सत्ता को सापेक्षिक रूप से हस्तगत कर लिया गया था।

(iii) अधीनस्थ नगर तीसरे प्रकार के थे। ये नगर राजाओं और राज्य के अधीन थे। फ्लोरेंस और पेरिस इस प्रकार के नगर थे। ये व्यापारिक नगर थे और आर्थिक दृष्टि से समृद्ध थे। ब्रॉडल के अनुसार व्यापारिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक नियंत्रण संबंधी प्रकार्य और शिल्प क्रियाकलाप बड़े नगरों के प्रमुख लक्षण हैं।

अनेक इतिहासकारों ने मध्यकालीन नगरों को सांस्कृतिक संरचना के रूप में देखने का प्रयास किया है और सांस्कृतिक निर्माण के रूप में नगरीय पहचानों तथा नगर स्वरूपों की शुरुआत की ओर लगातार नवीनीकृत और संशोधित होते रहे। नगरीय समुदायों का उनकी सामुदायिक भागीदारी, विदेशी संस्कृतियों के साथ संघर्ष, बहुलवादी समाजों की संरचना, द्विनिष्ठा या बहुनिष्ठा तथा बहुसम्बद्धता के कारण उनके सांस्कृतिक निर्माण के संदर्भ में अध्ययन किया जाता है।

प्रश्न 3. मध्यकालीन नगरों की प्रभुता के संबंध में हेनरी पिरेन के विचार पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर–हेनरी पिरेन ने कहा कि मध्यकालीन शहरों का उदय, विशेष रूप से ग्यारहवीं शताब्दी के बाद से, पश्चिमी यूरोप में एक परिवर्तनकारी बदलाव को चिह्नित करता है, जिसने सामंतवाद के पतन और अधिक जटिल, व्यावसायिक समाज के उद्भव में योगदान दिया।

पिरेन ने तर्क दिया कि मध्यकालीन यूरोप में लंबी दूरी के व्यापार का पुनरुद्धार एक नई आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था के गठन के लिए महत्त्वपूर्ण था। व्यापार मार्गों के साथ रणनीतिक रूप से स्थित मध्यकालीन शहर इस पुनरुद्धार के केंद्र बिंदु बन गए। उन्होंने न केवल आर्थिक आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान की, बल्कि राजनीतिक और सामाजिक शक्ति के केंद्रों के रूप में भी काम किया, जिसमें धनी व्यापारी और वित्तीय अभिजात वर्ग नियंत्रण में थे। पिरेन के लिए, ये शहर कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था से एक ऐसी अर्थव्यवस्था में संक्रमण का प्रतिनिधित्व करते थे जो तेजी से वाणिज्य और व्यापार पर केंद्रित थी। वे ग्रामीण आबादी के लिए चुंबक के रूप में कार्य करते थे, जो शहरी जीवन द्वारा प्रदान की जाने वाली सापेक्ष स्वतंत्रता और अवसरों की तलाश में ग्रामीण इलाकों से पलायन करते थे।

शहरों की प्रधानता पर पिरेन का दृष्टिकोण उनके तर्क से जुड़ा हुआ है कि मध्यकालीन शहर एक नई सामाजिक-राजनीतिक प्रणाली के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण थे जिसने अंतत: सामंती संरचना को कमजोर कर दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि शहर वे स्थल थे जहाँ वाणिज्यिक गतिविधि ने एक नए सामाजिक वर्ग–पूंजीपति वर्ग–के गठन को जन्म दिया, जो भूमि या पारंपरिक सामंती संरचनाओं से बंधे नहीं थे। इन नगरवासियों, विशेष रूप से व्यापारियों और कारीगरों

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com